चारुदत्तम्

शर्विलक की चौर्यकला का वर्णन करें ।

शर्विलक चारुदत्तम् प्रकरण में अप्रतिग्रही किसी ब्राह्मण कुल का एक उत्साही युवा है। उसका चरित्र सबलता एवं दुर्बलता का दुर्लभ मिश्रण है। वसन्तसेना की क्रीतदासी मदनिका से वह प्रणय करता है। उसे भार्या रूप में पाने के लिए उसे धन की आवश्यकता होती है। वह स्वयं अकिञ्चन है इसलिए वह किसी लोभी धनी अथवा शिष्टजन के द्वेषी निजी व्यवसाय में कठोर वणिक के घर में प्रवेश करके धन संचय करना चाहता है।

लुब्धोऽर्थवान् साधुजनावमानी वणिक् स्ववृत्तानतिकर्कशश्च ।
यतस्तस्य गेहं यदि नाम लप्स्ये भवामि दुःखोपहतो न चित्ते ॥

प्रेम की याचना उसे साहसिक बना देती है। चौर्य-कला में वह निष्णात है। कार्यारम्भ से कार्य समाप्ति तक चौर्यकला में उसकी विशिष्टता झलकती है।

कार्य आरम्भ करने से पूर्व वह चौर्य कार्य से संबन्धित ईश्वर को स्मरण करता है — "नमः स्कन्दाय"। "नमो रात्रिगोचरेभ्यो देवेभ्यः।"

वह सिद्धहस्त चोर है। सेंध काटने से पूर्व वह हर्म्य की भित्ती का निरीक्षण करता है। वह ऐसे स्थान का अन्वेषण करता है जहाँ की दीवार वर्षा आदि जल से नरम हो गयी है जिससे छेदने के समय शब्द न हो सके, अथवा कहाँ पर छेद विशाल होगा जिसके द्वारा भीतर की सारी चीजें सरलता से दिखाई पड़े, जहाँ की भित्ती जल लगने के कारण शिथिल पड़ गई हो तथा जहाँ स्त्रियाँ न देख सकें —

देशः को नु जलावसेकशिथिलश्छेदादशब्दो भवेत्
भित्तीनां क्व नु दर्शितान्तरसुखः सन्धिः करालो भवेत्
क्षारक्षीणतया चलेष्टककृशं हर्म्यं क्व जीर्णं भवेत्
कुत्र स्त्रीजनदर्शनं च न भवेत् स्वन्तश्च यत्नो भवेत् ।

उचित स्थान प्राप्त हो जाने पर वह विचार करता है कि किस आकार का सेंध काटा जाए। वह सेंध के विभिन्न आकारों से परिचित है —

सिंहाक्रान्तं पूर्णचन्द्रं झषास्यं
चन्द्रार्धं वा व्याघ्रवक्त्रं त्रिकोणम् ।
सन्धिच्छेदः पीठिका वा गजास्य-
मस्मत्पक्षया विस्मितास्ते कथं स्युः ॥

सिंह के उछाल के समान वक्रगति की, मकर के मुख की तरह अथवा अर्द्धचन्द्राकार वा पूर्ण चन्द्राकार जैसी, व्याघ्र के मुख की भाँति अथवा तिकोनी, चौकोनी या गज के मुख की आकृति वाली सुरंग हो जिससे चौर्य कार्य में दक्ष लोग भी आश्चर्यचकित हो जाएं और अन्ततः सिंहाक्रान्त नामक सुरंग का ही निर्माण करने का निश्चय करता है।

जैसे ही वह सेंध से गृह में प्रवेश करता है तो स्वप्न में ही विदूषक के बड़बड़ाने की आवाज सुनाई पड़ती है और वह विदूषक के जगे होने की आशंका से घबड़ा जाता है लेकिन वह अपना विवेक नहीं खोता है। सोए एवं जगे हुए व्यक्तियों के लक्षणों का उपयोग कर वह विदूषक की ~~जगे होने की आशंका से~~ श्वसन क्रिया नियमित रूप से चल रही है, आँखें बंद और पलकें स्थिर हैं तथा शरीर ढीला पड़ा है, तब उसे पूर्ण विश्वास हो जाता है, विदूषक निश्चय ही सोया हुआ है —

निःश्वासोऽस्य न शङ्कितो न विषमस्तुल्यान्तरं जायते
गात्रं सन्धिषु दीर्घतामुपगतं शय्याप्रमाणाधिकम् ।
दृष्टिर्गाढनिमीलिता न चपलं पक्ष्मान्तरं जायते
दीपं चैव न मर्षयेदभिमुखः स्याल्लक्ष्यसुप्तो यदि ॥

अब वह चौर्यकला का एक अन्य सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। कमरे में जले हुए दीपक को बुझाना आवश्यक है। लेकिन यदि वह वहाँ जाकर ~~स्वयं~~ बुझाएगा तो सोए हुए लोग जग जाएँगे। अतः वह साथ लाए ~~कीट~~ शलभ को दीपक की तरफ छोड़ देता है और इस प्रकार शलभ दीपक

बुझाकर गृह को अंधकारमग्न कर देता है। तत्पश्चात् सज्जलक एक बड़ा ही साहसिक कार्य करता है। जब नींद में ही विदूषक स्वर्ण भाण्ड चारुदत्त को देना चाहता है तब सज्जलक हाथ बढ़ाकर उसको ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार उसकी सम्पन्न हो जाती है।

वस्तुतः एक शातिर चोर होने के सारे गुण उसमें हैं। वह स्वयं कहता है —

मार्जारः प्लवने वृकोऽपसरणे श्येनो गृहालोकने
निद्रा सुप्तमनुष्यवीर्यतुलने संसर्पणे पन्नगः।
माया वर्णशरीरभेदकरणे वाग् देशभाषान्तरे
दीपो रात्रिषु सङ्कटे च तिमिरं वायुः स्थले नौर्जले॥

अर्थात् मैं कूदकर भागने में मार्जार, द्रुत गमन में वृक, गृह के वस्तुओं का अवलोकन करने में बाज, सुप्त मनुष्य के वीर्य मापने में निद्रा देवी, चलने में सर्प के तुल्य, स्थूल शरीर का विश्लेषण करने में माया, देश-देशान्तर की विभिन्न भाषा के विषय में वाग् देवी (सरस्वती), रात्रि में दीप, आपत्तिकाल में अन्धकार तुल्य (अदृश्य), स्थूल (पृथ्वी) पर वायु और जल में नौका की भाँति हूँ।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि एक कुशल चोर के सारे गुण सज्जलक में विद्यमान थे।

उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना करने पर स्पष्ट होता है तत्कालीन चौर्यकला अत्यन्त ही सुनियोजित ढंग से की जाती थी। इस प्रकार महाकवि भास ने सज्जलक के माध्यम से तत्कालीन चौर्यकला का बड़ा ही मनोरंजक वर्णन किया है।